

डॉ. डेविड हॉवर्ड, जोशुआ-रूथ, सत्र 20, जोशुआ 22 ट्रांसजॉर्डन जनजातियों को विदाई

© 2024 डेविड हॉवर्ड और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 20, जोशुआ 22, ट्रांसजॉर्डन जनजातियों की विदाई है।

फिर से हैलो। अब हम यहोशू की पुस्तक के अंतिम अध्यायों पर विचार करने के बिंदु पर हैं। इनमें से तीन अध्याय हैं और ये हैं, और हम इन्हें विदाई शीर्षक के अंतर्गत संक्षेप में एकत्रित कर सकते हैं। ये यहोशू की उन लोगों से विदाई है जो अब विरासत की भूमि पर बसे हुए हैं और तीनों के बीच कुछ निरंतरताएं हैं।

अध्याय 22 में, जोशुआ ट्रांसजॉर्डन जनजातियों को विदाई देता है, जो मानचित्र पर जॉर्डन के पूर्व में हैं। वे ही उस पार लाल रंग में हैं। फिर अध्याय 23 में, वह पूरे राष्ट्र को अलविदा कहता है, और उनसे प्रभु का अनुसरण करने का आग्रह करता है।

और फिर अध्याय 24 में, वह ऐसा ही कुछ करता है। उन्होंने देश को फिर से अलविदा कहा। ऐसा प्रतीत होता है कि यह दो अलग-अलग स्थानों पर है।

अध्याय 23 शीलो में प्रतीत होता है और फिर अध्याय 24 शकेम में प्रतीत होता है। और फिर अंत में पुस्तक लोगों की मृत्यु की तीन सूचनाओं के साथ समाप्त होती है, महत्वपूर्ण लोगों की, यहोशू की और फिर यूसुफ की, उसकी हड्डियों की, और फिर एलीआजर पुजारी की। तीन अंतिम घटनाओं में जोशुआ का अपना व्यक्तिगत नेतृत्व बिल्कुल स्पष्ट है।

तीन अलग-अलग संबोधनों में उन्होंने लोगों को आशीर्वाद दिया। वह उनसे प्रभु का अनुसरण करने का आग्रह करता है। वह उन्हें अवज्ञा के परिणामों की चेतावनी देता है।

वह उनके प्रति ईश्वर की निष्ठा की समीक्षा करता है और उन्हें अनुसरण करने की चुनौती देता है। उसने उनके साथ वाचा की पुष्टि की। और इसलिए, जैसा कि हमने शुरू में उल्लेख किया था, जब यहोशू अंततः मर जाता है, तो उसे पहली बार पुस्तक में प्रभु का सेवक शीर्षक दिया जाता है।

तो, यह ऐसा है मानो लगभग, आप जानते हैं, जैसा कि यीशु ने बात की थी, अच्छा किया, अब अच्छा और वफादार नौकर, उनके दृष्टान्तों में से एक। ऐसा लगता है कि जोशुआ की किताब इस आदमी को इसी तरह प्रस्तुत कर रही है। वह मूसा की सहायता है।

वह स्पष्ट रूप से मूसा का उत्तराधिकारी है और कई मायनों में धन्य है, लेकिन पुस्तक के अंतिम छंदों तक उसे वह उपाधि नहीं मिलती है। तीनों अध्याय एक तरह से अतीत की समीक्षा करते हैं, लेकिन वे भविष्य की ओर भी देखते हैं। और यहां शुरुआत में ध्यान जॉर्डन के पूर्व में जनजातियों के बसने पर होगा।

तो, हम अध्याय 22 को देखकर शुरुआत करने जा रहे हैं। और यह ट्रांसजॉर्डन जनजातियों, अर्थात् जॉर्डन के पार की जनजातियों के लिए जोशुआ की विदाई है। ट्रांस शब्द का यही अर्थ है।

और यदि आप कुछ टिप्पणियों में पढ़ते हैं, तो इस तरह का एक अजीब शब्द है जिसे सीआईएस-जॉर्डन जनजाति, सीआईएस जॉर्डन कहा जाता है। यह मूल रूप से जॉर्डन के पश्चिम की जनजातियाँ हैं, जिन्हें हम इज़राइल का मुख्य निकाय मानते हैं। मैं कॉलेज में रसायन विज्ञान का प्रमुख था और मेरी अस्पष्ट स्मृति सीआईएस और ट्रांस का उपयोग परमाणुओं में एक या दूसरे तरीके से घूमने वाले इलेक्ट्रॉनों के बारे में बात करने के लिए किया जाता था, जो कुछ इसी तरह का प्रभाव था।

और ऐसा लगता है कि इसे भौगोलिक दृष्टि से भी ले लिया गया है। वैसे भी, अध्याय 22 की पृष्ठभूमि, पहले छह छंद, अध्याय 21 छंदों से है, मुझे क्षमा करें, अध्याय 1 छंद 13 से 15 तक, जहाँ जोशुआ ट्रांसजॉर्डन जनजातियों को संबोधित कर रहा है। और याद रखें संख्याओं की पुस्तक में, उन्होंने मूसा से वहाँ बसने में सक्षम होने के लिए कहा था।

उन्हें यह जमीन पसंद आयी। जंगल में भटकना उन सभी को स्पष्ट रूप से पूरे और आंशिक रूप से यहाँ तक ले आया था। और इन जनजातियों को यह भूमि पसंद आयी।

यह उनके मवेशियों के लिए अच्छा था। और इसलिए उन्होंने मूसा से यहीं बसने के लिए कहा। मूसा मूल रूप से इस बारे में बहुत क्रोधित था, यह सोचकर कि वे आगे आने वाले संघर्षों की ज़िम्मेदारी से बचना चाहते थे।

और उन्होंने मूसा को आश्वासन दिया कि नहीं, वे अपना काम करने जा रहे थे, बाकी सभी के साथ अपना काम करेंगे और फिर वापस आ जायेंगे। और इसलिए, मूसा, परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से, इसे मंजूरी दी। जोशुआ अध्याय 1, जोशुआ उन्हें बाकी सभी के साथ रहने के उनके दायित्वों की याद दिलाता है।

और वे, बाकी सभी लोगों के साथ, पुष्टि करते हैं कि हां, आप हमें जो भी आदेश देंगे हम वह करेंगे। और इसी तरह, अध्याय 1 श्लोक 16 से 18 तक। तो यहाँ अध्याय 22 के प्रकरण की पूरी पृष्ठभूमि है।

पहले छह छंद हमें दिखाते हैं कि उन्होंने उनका पालन किया और वे अपने वादों और प्रतिबद्धताओं के प्रति वफादार थे। तो, पद 1, यहोशू 22 पद 1, यहोशू ने इन ढाई गोत्रों, रूबेन के गोत्र, गादियों, और मनश्शे के आधे गोत्र को बुलाया। और उन्होंने कहा, जो जो आज्ञाएं यहोवा के दास मूसा ने तुम को दी थीं, उनको तू ने माना है, और जो जो आज्ञाएं तू ने तुझे दी हैं उन सभीको तू ने माना है, और मेरी बात भी मानी है।

तुमने अपने भाइयों को नहीं छोड़ा है। और यह उन पहले पाँच छंदों में चलता है। और यह इन जनजातियों की ओर से वफादार आज्ञाकारिता का एक अद्भुत उदाहरण है।

इसलिए, जिन विषयों पर हमने पुस्तक में प्रकाश डालने का प्रयास किया है उनमें से एक विषय आज्ञाकारिता है। और हम निश्चित रूप से इस समूह को एक उदाहरण के रूप में देखते हैं। बस एक आकस्मिक छोटी सी कहानी।

वर्षों पहले, मैं यहोशू की पुस्तक के माध्यम से प्रचार कर रहा था और अध्याय 1 में था, जो श्रृंखला की शुरुआत थी। और दूसरे रविवार को, मैं इन ट्रांसजॉर्डन जनजातियों के बारे में अध्याय 1 श्लोक 10 से 18 तक उपदेश दे रहा था। और वह रविवार इस विशेष चर्च, कम्युनियन संडे में हुआ।

और चर्चों में कम्युनियन के बारे में मेरी व्यक्तिगत शंकाओं में से एक यह है कि यह अक्सर एक सेवा के अंत में लगाए जाने वाले एक उपांग की तरह होता है। हमें इसे महीने के हर पहले रविवार या तिमाही के हर पहले रविवार को करना होगा। और वास्तव में इस पर विचार नहीं किया गया है।

यह शेष सेवा के साथ एकीकृत नहीं है। और इसलिए जब मैं ट्रांसजॉर्डन जनजातियों और उनके साथ जोशुआ के शब्दों पर अपना संदेश तैयार कर रहा था, तो मैं सोच रहा था कि मैं इसे सहभागिता के साथ कैसे जोड़ सकता हूँ? और ऐसा करने में सक्षम होना कठिन लग रहा था। लेकिन फिर मुझे याद आया कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों में साम्य के बारे में क्या कहा था।

उन्होंने कहा, कि जब आप एक साथ इकट्ठा होते हैं, तो यह पृष्ठभूमि बन जाती है कि कम्युनियन के बारे में पॉल के निर्देश यह थे कि लोग अव्यवस्थित तरीके से इकट्ठा हो रहे थे। और कुछ लोग सारा खाना खा रहे थे और कुछ लोग भूखे रह रहे थे। और पॉल कह रहा है, आइए इसे शालीनता और क्रम से करें।

सुनिश्चित करें कि सभी लोग भाग लें इत्यादि। यह विचार कि पॉल चर्च में एकता के बारे में बात करने की कोशिश कर रहा है, ट्रांसजॉर्डन जनजातियों और जॉर्डन के पश्चिम की जनजातियों के इज़राइल में शरीर की एकता के संदेश के साथ बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है। और इसलिए, इसने एक सामुदायिक उपदेश के रूप में बहुत अच्छा काम किया।

मैं आपमें से किसी को भी इसकी सराहना करूंगा जो इस पर सबक या उपदेश देने की स्थिति में हैं। तो, छंद छह में यहोशू उन्हें आशीर्वाद देता है, उन्हें वापस भेजता है और वे अपने तंबू में चले जाते हैं। और श्लोक सात से नौ तक, वह आशीर्वाद जारी रखता है, और वे व्यवस्थित हो जाते हैं।

और इस बिंदु पर ऐसा महसूस होता है मानो कहानी समाप्त हो जानी चाहिए। किताब एक कुएं में लिपटी चीजों के निष्कर्ष की ओर बढ़ रही है। अध्याय 19 एक अनंतिम अंत की तरह समाप्त होता है।

लेकिन अध्याय 21 में, प्रभु के सभी वादे पूरे हुए। यहां सबके पास अपनी-अपनी जमीन वगैरह थी। इसकी पुष्टि होती दिख रही है।

ऐसा महसूस होता है, जैसा कि आप जानते हैं, कविता नौ के बाद, यह लगभग ऐसा है कि हर कोई हमेशा खुशी से रहेगा। लेकिन अब हमारे सामने श्लोक 10 से शुरू होने वाला एक संघर्ष है। और यह अंत में जो हम देखते हैं, जो हम अध्याय में बाद में देखते हैं, उससे शुरू होता है।

यह इन ट्रांसजॉर्डन जनजातियों द्वारा एक सकारात्मक आवेग, एक सराहनीय आवेग से प्रेरित है। और इसलिए हम इसे यहां श्लोक 10 में देखते हैं। इसमें कहा गया है, जब वे कनान देश में जॉर्डन के क्षेत्र में आए, तो रूबेन के लोगों, गाद के लोगों, मनश्शे के आधे गोत्र ने वहां एक वेदी बनाई जॉर्डन, भव्य आकार की एक वेदी।

और ध्यान दें कि यह क्या कहता है, वे कनान देश में जॉर्डन के क्षेत्र में पहुँच गये। ऐसा प्रतीत होता है कि वे जॉर्डन के पार अपने सहकर्मियों, भाइयों और बहनों के साथ बातचीत कर रहे हैं और वे जहां रहते हैं वहां वापस आ रहे हैं। परन्तु कनान देश में, अर्थात् यरदन के पश्चिमी किनारे पर, वे इस बड़ी वेदी का निर्माण करते हैं।

यह एक दिलचस्प बात है। यह एक बड़ी वेदी है और यह जॉर्डन के दूसरी ओर है। यह उनके पक्ष में नहीं है।

ताकि, हमें इसके कारणों के बारे में बाद में पता चले। कहानी को एक तरह से प्रकट तरीके से बताया गया है। हम बाद के भागों तक सभी विवरण नहीं जानते हैं।

लेकिन वे यह बड़ी वेदी बनाते हैं। और तुरन्त, पद 11 में, इस्राएल के लोगों ने यह सुना। और यहां श्लोक 11 में दी गई शब्दावली पर ध्यान दें।

यह कहता है कि इस्राएल के लोगों ने यह सुना। अब, तकनीकी रूप से, ये ट्रांस-जॉर्डन जनजातियाँ भी इज़राइल का हिस्सा थीं। वे 14 विभिन्न प्रभागों की 12 जनजातियों का हिस्सा थे जिनका हमने पहले उल्लेख किया है।

लेकिन इस अध्याय का पाठ जॉर्डन के पश्चिम में केवल साढ़े नौ जनजातियों को ही इज़राइल के लोग कहता है। और यह एक तरह से पश्चिम और पूर्व वालों के बीच संभावित विभाजन को दर्शाता है। और यही मूल है, हमें बाद में पता चला, यही जॉर्डन के पूर्व के लोगों की चिंता का मूल है।

कि वो अलग नहीं होना चाहते। वे आने वाली पीढ़ियों के लिए अपने भाइयों और बहनों के साथ एक रहना चाहते हैं। लेकिन लेखक ने आह्वान करके उस संभावित अलगाव पर प्रकाश डाला है, यह जॉर्डन के पश्चिम के लोगों के बारे में नहीं कहा गया है, यह सिर्फ इज़राइल के लोगों के बारे में कहा गया है।

तो श्लोक 11 में तुरन्त, वे इस पर ध्यान देते हैं। और इससे उन्हें खतरा नजर आ रहा है। इसलिए पद 12, वे यरदन के पूर्व के गोत्रों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए शीलो में एकत्रित होते हैं।

और इसलिए, वे अब गृहयुद्ध के कगार पर हैं। विडम्बना यह है कि उन्होंने इतने वर्ष और जोशुआ की अब तक की अधिकांश पुस्तक कनानियों से लड़ते हुए बिताई है। अब आपस में लड़ने की नौबत आने वाली है।

तो, अगले छंदों में कुछ बातचीत और क्या हो रहा है, के बारे में बात की गई है। और यरदन के पश्चिम के गोत्र पद 10 में प्रश्न पूछते हैं, यह कौन सा विश्वास का उल्लंघन है जो तुम ने इस्राएल के परमेश्वर के विरुद्ध किया है, जो तुम ने आज यहोवा के पीछे चलने से विमुख होकर अपने लिये वेदी बनाकर यहोवा के विरुद्ध विद्रोह किया है। ? तो, विश्वास के उल्लंघन शब्द पर ध्यान दें। यह वही शब्द है जिसे हमने आचन के पाप के संबंध में देखा है, अध्याय 7, श्लोक 1। यह वह शब्द है जिसके बारे में हमने अक्षम्य, अनजाने पाप बनाम जानबूझकर किए गए पाप के मुद्दे के संदर्भ में बात की है।

अनुबंध को तोड़ना, विश्वास को तोड़ना यहाँ मुद्दा प्रतीत होता है। और उनके विरुद्ध विद्रोह में एक वेदी का निर्माण. अब लैविकस, अध्याय 17 में, तम्बू के आसपास के क्षेत्र को छोड़कर कहीं भी वेदी बनाने पर प्रतिबंध है।

और इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ इस परिच्छेद की पृष्ठभूमि यही है। यहां लेवी, ट्रांस-जॉर्डन जनजातियां जॉर्डन के पास एक वेदी बना रहे हैं, न कि तम्बू के पास। और तब इस्राएल के अधिकांश लोगों को लगता है कि यह एक खतरा है, यह धर्मत्याग है, ये लोग, ऐसा कहें तो, कनानियों की तरह बन रहे हैं।

और इसलिए यही ट्रिगर है. और इसलिए, वे आगे बढ़ते रहे। पद 17, क्या हम पोर के पाप से बहुत नहीं भर गए, जिस से हम अब तक अपने आप को शुद्ध नहीं कर सके, जिसके कारण यहोवा की मण्डली पर विपत्ति पड़ी।

पोर का पाप संख्याओं, अध्याय 25 में वापस चला जाता है, जब बिलाम ने लोगों को मिद्यान की बेटियों, मोआब की बेटियों के साथ वेश्यावृत्ति करने के लिए उकसाया। और जाहिर तौर पर इसका लंबे समय तक प्रभाव रहा। और साढ़े नौ जनजातियों में से अधिकांश को ऐसा लगा कि यह उसका उलटा है।

हमने किताब में आज्ञाकारिता और किताब के अनुसार चीजों को सही ढंग से करने की कोशिश करने वाले लोगों के बारे में बहुत कुछ देखा है, यानी अतीत की विद्रोही पीढ़ियों को अपने पीछे रखने की कोशिश कर रहे हैं। और अब यहां उन्हें उस तरह के पाप की संभावित वापसी का एहसास होता है। तो वे उस पाप के बारे में बात करते हैं।

वे आकान के विषय में बात करते हैं, आयत 20, क्या जब्दी के पुत्र आकान ने विश्वास नहीं तोड़ा? यह वही शब्द है जिसे आप श्लोक 16 में देखते हैं। समर्पित वस्तुओं के मामले में, क्रोध उस पर गिर गया। इसलिए, वे डरते हैं कि भगवान का क्रोध उन पर आने वाला है।

यह संख्या 25 में पोर के पाप के कारण एक महामारी के रूप में फैल गया था, और जब आकान ने पाप किया तो इसका प्रभाव उन पर भी पड़ा था। इसलिए, वे नहीं चाहते कि ऐसा दोबारा हो।

तो, टांसजॉर्डन जनजातियाँ, रूबेन, गाद और मनश्शे की आधी जनजाति, वास्तव में दिलचस्प तरीके से प्रतिक्रिया देती हैं।

श्लोक 22, यह ईश्वर के नामों का एक संग्रह है, और यह पुराने नियम में कहीं भी ईश्वर के नामों का सबसे बड़ा संचय है। और यह लगभग एक तरह का है, ऐसा महसूस होता है कि वे यह कहने के लिए अपने आप में गिर रहे हैं कि नहीं, हम सच्चे ईश्वर के अनुयायी हैं। तो, वे पद 22 में कहते हैं, पराक्रमी, परमेश्वर, प्रभु, पराक्रमी, परमेश्वर, प्रभु, वह जानता है।

और यह चलता रहता है. तो, वे कहने की कोशिश कर रहे हैं, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। हम स्पष्ट रूप से आपके साथ रूढ़िवादी भाई-बहन हैं, और हम एक ही ईश्वर की पूजा करते हैं।

इसलिए, वह जानता है और इस्राएल को स्वयं ही बता देता है कि यदि उसने प्रभु के विरुद्ध विद्रोह किया था या विश्वास का उल्लंघन किया था, तो आज वेदी बनाने के लिए हमें मत छोड़ो, वगैरह-वगैरह। लेकिन नहीं, वे ऐसा क्यों कर रहे हैं इसका कारण अब श्लोक 24 में पता चला है। नहीं, हमने ऐसा इस डर से किया कि आने वाले समय में आपके बच्चे हमारे बच्चों से कह सकते हैं, तुम्हें भगवान से क्या लेना-देना इजराइल का? क्योंकि यहोवा ने यरदन को हमारे बीच सीमा बना दिया है।

इसलिये पद 26 में हम ने कहा, आओ हम वेदी बनाएं, न होमबलि के लिये, न बलिदान के लिये। तो बस समीक्षा करने के लिए, इन लोगों का डर यह है कि आने वाली पीढ़ियों में, जॉर्डन नदी स्पष्ट रूप से एक भौगोलिक सीमा बनाएगी, लेकिन उन्हें डर था कि आने वाले समय में, उनके बीच बातचीत कम और कम हो जाएगी। और ये वंशज अंततः कहेंगे, तुम कौन हो? तुम हमारे नहीं हो.

और यह समूह यह सुनिश्चित करना चाहता था, नहीं, हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि शरीर की एकता बनी रहे। और यह बात उन वादों पर वापस जाती है जो उन्होंने अध्याय एक में किए थे। इसलिए, उन्होंने वेदी को यरदन के पश्चिम में बनाया, पूर्व में नहीं।

उन्होंने इसे बलिदान के लिए नहीं बनाया था। दूसरे शब्दों में, वे इसका उपयोग बुतपरस्त भेंटों के लिए नहीं करेंगे, बल्कि श्लोक 27, हमारे और आपके बीच और आपके बाद हमारी पीढ़ियों के बीच गवाह बनने के लिए करेंगे। और पद 28 एक तरह से इसे दोहराता है।

हमने सोचा कि अगर आने वाले समय में हमें या हमारे वंशजों को यह बताया जाना चाहिए, तो हमें कहना चाहिए, देखो, भगवान की वेदी की नकल, जो वेदी वे बना रहे हैं वह सच्ची वेदी की नकल है, जैसा कि इरादा है उस संबंध को बनाए रखें. लेकिन यह बलिदान के लिए नहीं है. यह होमबलि या बलिदान के लिए नहीं है, बल्कि हमारे बीच गवाह बनने के लिए है।

और इसलिए तथ्य भी, दो बातें। एक तो यह बहुत बड़ी वेदी है। ऐसा लगता है जैसे शुरुआत में, पाठ इस बात पर जोर देता है कि यह बड़ा है।

तो शायद यह सामान्य वेदी से बड़ी थी। और दूसरी बात, यह जॉर्डन के पार था, इसलिए यह इतना बड़ा था कि वे इसे देख सकते थे। वे केवल उस पर बलिदान चढ़ाने के लिए नहीं आ रहे थे, बल्कि यह सिर्फ नदी के उस पार होने के लिए था, कहते हैं, हमें याद है कि वहाँ वेदी है।

वह तम्बू की सच्ची वेदी की प्रति है। और यह आपके साथ भाई-बहन बनने की हमारी प्रतिबद्धता का संकेत और गवाह है। तो, पद 30 और उसके बाद, जब याजक पीनहास और बाकी मण्डली ने पद 30 के अंत में ये बातें सुनीं, तो यह उनकी दृष्टि में अच्छा था।

तो, इस कहानी का सुखद अंत हुआ। वे पीछे हट गए और कहा, आज हम जानते हैं, पद 31, हम जानते हैं कि प्रभु हमारे बीच में हैं क्योंकि तुमने ऐसा नहीं किया है, तुमने प्रभु के विरुद्ध विश्वास का उल्लंघन नहीं किया है। तो, अब तुम यहोवा के हाथ से इस्राएल के लोगों में प्रवेश कर चुके हो।

तो अब तुम इस्राएल के लोगों का भाग हो। अध्याय का पहला भाग, लेखक के अनुसार इज़राइल के लोग, साढ़े नौ जनजातियाँ हैं। अब यहाँ, वे हैं, वे उसमें शामिल हैं।

और इसलिए, वे घर लौट आए, हर कोई भगवान को आशीर्वाद देता है, और गृहयुद्ध का कोई खतरा नहीं है। और हर किसी को, ऐसा महसूस होता है कि इसका अंत हमेशा के लिए खुशी से हो रहा है। वे उस स्थान को साक्षी का नाम देते हैं।

यह हमारे बीच एक गवाही है कि प्रभु ईश्वर है, श्लोक 34। और यह उस विशेष प्रकरण को समाप्त करता है। ट्रांसजॉर्डन जनजातियों को विदाई।

यह डॉ. डेविड हॉवर्ड रूथ के माध्यम से जोशुआ की पुस्तकों पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 20, जोशुआ 22, ट्रांसजॉर्डन जनजातियों की विदाई है।